कहानी

ब्राह्मणो मम् दैवतम् !

डॉ. शक्तिराज

सुबह के चार बजने में थे। साइलु अपने घर के आँगन में झूले नुमा चारपाई पर सोने की असफल कोशिश कर रहा था। आँखों में गहरी नींद तो थी, पर नींद है कि उसे आ ही नहीं रही थी। उसे नींद न आने के तीन कारण थे। पहला यह कि जाड़े के दिन थे। घर के बाहर ठण्ड इतनी ज़्यादा थी कि मानो बदन में बहनेवाला खून भी जम जाय। दूसरा, उसके तन पर ओढ़ने के लिए कुछ भी नहीं था। घर के अंदर सो रहे पत्नी और बच्चों में से किसी को जगा सकता था वह, पर 'क्यों उनकी नींद खराब करें' इस विचार से उसने ऐसा नहीं किया। तीसरा कारण यह भी था कि उसे बस कुछ ही देर बाद काम पर जाना था।

उसे घर आये महज एक-डेढ़ घंटा ही हुआ होगा। देर रात तक तो वह, अपने गाँव मदनूर के सरपंच वेदप्रकाश जी के घर पर काम करता रहा। कल सरपंच जी के घर में शिव पूजा का विशाल कार्यक्रम था। बहुत ही भव्य-दिव्य कार्यक्रम। पंडित लोगों की मंडली ने मिल-जुल कर मुहूर्त निकाला था। विशेष बात यह कि कल ही के दिन पूरे गाँव में सत्यनारायण की पूजा भी थी। लेकिन सरपंच जी के घर विशेष पूजा का आयोजन था। साइलु काम का पक्का और ईमानदार था। इसीलिए सरपंच जी ने उसे अपने घर बुला लिया। सात-आठ दिन से वह ग्राम पंचायत की ड्यूटी कर के वेद पटेल (वेदप्रकाश) जी के घर पर काम करने जा रहा था।

विशेष पूजा के लगभग एक हफ़्ते पहले से ही दूर-दूर से पंडित-पुजारी लोग पटेल जी के घर आने लगे थे। घर का माहौल पूरी तरह से बदल गया था। पुजारियों का एक जत्था, जो बहुत पहले उनके यहाँ पहुँचा था। वह जैसा निर्देश देता पटेल जी का पूरा परिवार उसका पालन करता। उनके कहने पर छोटे-छोटे बच्चों तक से जबरन उपवास आदि करवाया जा रहा था। साइलु को ये नौटंकी देख कर बहुत गुस्सा और हंसी आती। वह मन ही मन कहता कि "ये लोग शरीर से नहीं बल्कि अपने जेहन से अपाहिज़ हैं।" पुजारियों ने जहाँ पूजा का मंडप बनाने को कहा था साइलु ने वहाँ बहुत ही शानदार मंडप बनाया। पूजा के दिन भोर होने से पहले ही वह कई तरह के फल-फूल-पत्ते आदि ले आया और पुजारियों के हवाले कर दिया। वे साइलु के काम को देख कर बहुत प्रसन्न हुए।

डॉ. शक्तिराज वर्तमान में टी. जी. टी. हिंदी विषय, तेलंगाना स्टेट मॉडेल स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज, कामारेड्डी, तेलंगाना में कार्यरत हैं।

पूजा शुरू हुई। गाँव के सम्मानित लोग, नए-पुराने मित्र, राजनीति के धुरंधर नेता, मेहमान आदि से घर और घर का पूरा परिसर भर गया था। मेहमानों को बैठने के लिए बड़े-बड़े टेंट ओढ़ कर उसमें कुर्सियां बिछाई गई थी। घर का वातावरण मंत्रोच्चारणों से गूँज उठा। कुछ देर बाद हवन भी शुरू हुआ, जिसके कारण घर में इतना ज्यादा धुँआ फ़ैल गया कि मानो ठंड के मौसम का कोहरा छा गया हो। छोटे बच्चों के रोने की आवाज़ मंत्रोंच्चारण में गुम हो रही थी। हवन का धुवाँ बढ़ता ही जा रहा था। ठीक से कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था। पूजा के लिए आये लोगों के आँखों की सिकुड़न देख कर ऐसा लग रहा था कि मानो सब के सब चीन के नागरिक हों। कुछ लोग अपनी आँखों को बेरहमी से मल रहे थे तो कुछ खाँस भी रहे थे। भीगी बिल्ली की तरह सब लोग चुप बैठे थे। इतने में "आग ! आग!" की शोर मच गई। हवन कुंड से उठने वाली चिंगारियों से आंगन में लगे टेंट में हल्की सी आग लग गई थी। लेकिन देखते ही देखते लोगों ने बाल्टियों और घड़ों में पानी भर भर कर उस हल्की सी आग को बुझाकर पूरा टेंट गीला कर दिया। पूजा के दिन ऐसा अपशकुन लोगों को अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन किसी की मजाल कि कोई सिर उठा कर बोल दें। सभी लोग इस बात को लेकर राहत की सांस ले रहे थे कि जान-माल का नुक़सान नहीं हुआ था। आग को अपना विकराल रूप लेने से पहले ही बुझा दिया गया। घटना के कारण पटेल जी का चेहरा थोड़ा सा निस्तेज हुआ। लेकिन थोड़ी ही देर बाद एक बुज़ुर्ग पंडित ने सभी लोगों की खुसर-फुसर सुन कर बड़ी अजीब बात कह दी। "जय हो बम भोले!" लोगों का अटेंशन उनकी ओर चला गया। वे बोले "शिव जी के विशेष पूजन के अवसर पर इस तरह की आग लगने वाली घटना का घटनाशास्त्रों में बहुत ही शुभ संकेत माना जाता है। आप निश्चिंत रहें। साक्षात शिव जी ही इस भव्य दिव्य पूजा में अपनी उपस्थिति दे गए हैं। वे खुद अपनी तीसरी आंख खोल कर इस हवन में अग्नि छिड़क गए हैं।" फिर क्या था, कुछ लोग "शिवजी की जय !" के नारे लगाने लगें तो कुछ लोग "महादेव की जय!" अन्य कुछ लोग "हर हर महादेव !" की पुनरावृत्ति करने लगे। घर का माहौल ही कुछ अलग था। इस पूरे घटनाक्रम को साइलु देख रहा था। वह सोच में पड़ गया कि "पटेल जी अमीर हैं इस लिए उनके घर में आग लगना भी अच्छा होता है। अगर यही घटना किसी ग़रीब के घरमें घटती तो ये पुजारी लोग न जाने क्या क्या सुनाते!"

कुल मिलाकर आज पटेल जी के घर में पुजारियों का ही बोल-बाला था। उनके कहने पर बैठना और उन्हीं के कहने पर उठना। वेद पटेल का पूरा परिवार, जो हमेशा जंगल के शेर की तरह व्यवहार किया करता था, आज वह सर्कस के शेर की तरह अपनी पूँछ को दोनों टाँगों के बीच लाने को मजबूर था। सरपंच जी के घर वालों पर खुले बदन में धागा बंधे और कच्छा पहने हुए लोगों का कब्ज़ा था।

> कल-परसों तक सरपंच जी के घर का ही एक सदस्य समझे जाने वाले और घर में बे रोक टोक कहीं भी घूमने-फिरने, घर के सदस्यों को छूने तथा कहीं पर भी बैठकर खाने-पीने वाले साइलु के साथ आज सब लोग 'टच मी नॉट' पौधे की तरह व्यवहार करने लगे थे। आज वह उस पूजा के मंडप को छूना तो दूर उसके करीब भी नहीं जा पा रहा था, जिसे वह अपने ही हाथों से बनाया था। साइलु को बहुत अजीब लग रहा था इस तरह का व्यवहार। वह अपने आप से पूछने लगा कि "इस विशाल पूजा-पाठ से किसे लाभ होने वाला है? भगवान शिवजी को? सरपंच के परिवार को? गाँव वालों को? पूजा में शामिल अतिथियों को? या हवन के धुंवे से ख़राब हुई आँखों का इलाज़ करनेवाले वैद्य को? या फिर इन पंडितों को?"

हवन के समाप्ति के बाद भोजन की व्यवस्था की गई थी। साइलु के साथ-साथ पंचायत के अन्य लोग वेटर की तरह मेंहमानों को खाना परोस रहे थे। वैसे कहने को तो यह कार्यक्रम निजी था। लेकिन उसमें काम करने वाले सब ग्राम पंचायत के सरकारी लोग ही थे। सेक्रेटरी से लेकर सफाई कर्मचारी तक लगभग सभी लोग उनके घर पर अपनी-अपनी सेवाएँ दे रहे थे। साइलु और उनके साथियों का, जो साफ-सफाई करना, पोछा लगाना और लोगों के द्वारा खाये हुए झूठे पत्तलों को उठाने का काम करते थे, बहुत ही बुरा हाल था। सबसे ज्यादा वे ही काम कर रहे थे। 'फोर्थ केटेगरी' के लोगों से जबरन काम करवाने का पुराना रिवाज़ यहाँ भी अपने चरम पर था। पुरे गाँव में सफाई से संबंधित कार्य, चाहे वह नालियों को साफ करने का हो या सडकों की सफाई का, साइलु और उसके साथी ही करते थे। गाँव को साफ़ रखना साइलु का अपने नौकरी के प्रति समर्पण भाव और कर्त्तव्य था तो गाँव के प्रथम नागरिक सरपंच जी के घर को साफ-सुथरा रखना उसकी मज़बूरी थी।

पूजा-पाठवाला प्रोग्राम तो कब का ख़त्म हो गया था। लेकिन घर की साफ़-सफाई, पोछा और बर्तन माँजना इन सभी

कामों से निपटते निपटते रात के तीन-साढ़े तीन बज चुके थे। सरपंच जी के घर से अपने-अपने घर वापिस लौटने वालों में अंतिम व्यक्ति साइलु ही था।

साइलु की उम्र यही कुछ चालीस-पैंतालीस वर्ष होगी। पति-पत्नी दोनों अशिक्षित हैं। एक छोटा-सा घर है उनका। दो संतान-बेटी और बेटा ऐसा छोटा-सा परिवार। दोनों बच्चे पढ़ने में तेज। औरों की तुलना में उन्हें पढ़ने-लिखने के लिए सुविधाएँ बहुत कम थीं फिर भी वे अव्वल थे। गाँव वाले कहा करते थे कि "खानगी (प्राइवेट) इस्कूलों में अपने पोट्टों (बच्चों) कु पढ़ाने जितनी इसकी औकात नै है इसके पास। इसके पोट्टे सरकारी इस्कूलों में पढ़ते। फिर भी हमारे बच्चों से हुशार है साले! हमारे बच्चों के जैसा इसके पोट्टों कु टिवशन नै है कुछ भी नै है फिर भी साला...!" अपने बच्चों को इस तरह शार्प बनाने में साइलु और उसकी पत्नी सावित्री का बहुत बड़ा योगदान था। वे दोनों बहुत मेहनती थे। साथ ही साथ तार्किक भी। समय के वे बहुत पाबंद थे। मेंहनत किये बिना लोगों को बेवकूफ़ बना कर अपना पेट भरना उन दोनों को भाता नहीं था। वे अपनी मेंहनतको ही सर्वस्वमानते थे।उन्हें कभी किसी मंदिर में, गिरजाघर में या किसी मज़ार पर माथा टेकते हुए किसी ने देखा नहीं था।

हाँ ! तो मैं बता रहा था कि साइलु को नींद नहीं आ रही थी। जैसे-तैसे वह सो भी जाता पर पाँच सवा-पाँच बजे उसे झाड़ू हाथ में लिए काम पर भी तो जाना था। कल के प्रोग्राम में साइलु के द्वारा दिन और रात तमाम काम करने की बात पंचायत सेक्रेटरी और सरपंच वेदप्रकाश जी दोनों को मालूम थी। लेकिन किसी के मन में उसे सुबह के काम पर जाने से 'एक्सक्यूज़' देने का ख़याल नहीं आया। उसका शरीर पूरी तरह से थक गया था। बाहर ठण्ड बढ़ रही थी। कुछ देर बाद काम पर जाना है इसकी भनक किसी घड़ी के अलार्म की तरह उसके कानों में सुनाई दे रही थी। कुछ देर वह चारपाई में करवटें बदलता रहा। अब तक वह नींद न आने के कारण परेशान था। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे उसकी पलकें बोझिल होकर झुकने लगीं। उसे यक़ीन हो गया कि अब यदि नींद आ जाती है तो उसे काम पर जाने में देर होगी ही। ऐसा सोच कर वह नींद को भगाने के लिए अपनी चारपाई से उठा। ठंडे पानी से ही हाथ-मुँह धो लिया। कुछ देर चारपाई पर बैठे अपने घर के बंद किवाड़ को निहारते रहा। ठंड के कारण बदन काँप रहा था। उसने एक बहुत बड़ी जम्हाई कुछ इस अंदाज में ली कि मानो पुरे ठंड को निगल लेना चाहता हो। लेकिन दूसरे ही क्षण वह अपने बड़े मुहँ से अंदर लिए हुए हवा को "आय्य्य....आय्य...आय..!" कहते हुए बाहर कर दिया। ठंड को बर्दाश्त करना अब उससे नहीं हो रहा था। इसलिए वह खटिया से उठ कर सूखी लकड़ियाँ आदि इकट्ठा कर जलाने लगा। वह आग को अपने दोनों हाथों में कैद करने की चेष्टा कर रहा था। कुछ देर बाद, जब आग की लपेटें पूरी तरह से शांत हो गईं, वह उठा और झाड़ू लेकर ग्राम-पंचायत की ओर चल पड़ा।

गाँव में लोगों की चहल-पहल बढ़ रही थी। कोहरा छाया हुआ था। वह ग्राम-पंचायत में पहुंचा। अन्य लोग भी पहुँचें थे। उनका मुखिया हन्मन्लू सबको किन-किन गली-मोहल्लों में जाकर झाड़ू लगानी है और नालियों की सफ़ाई आदि करनी है बारी-बारी बता रहा था। साइलु की बारी आई तो हन्मन्लू ने कहा- "अरे साइलु !"

"हाँ बोलिये!" साइलु ने कहा। उसकी आवाज़ में जाड़े की नमी थी।

मुखिया ने अपने हाथ में थामी हुई सूचि देखते हुए बोला- "आज न...! तू..ऊ ऊ...! ऐसा कर, गांव के बाहरवाले दक्षिण मुख हनुमान और राम मंदिर के परिसर में झाड़ू लगा ले !"

"ठीक है साब" - ऐसा कह कर वह आगे बढ़ा।

"अरे सुन!" - हन्मन्लू ने उसे रोका।

"हाँ बोलिए" - साइलु पीछे मुड़ा। अपने दाहिने हाथ में पकड़े लंबे झाड़ू को बाएँ हाथ के बगल में रख कर दोनों हथेलियों को रगड़ने लगा ताकि हथेलियाँ गर्म हो जाय। मुखिया बोलने लगा- "मुझे पता है कि तू कल रात हमारे लौट आने के बाद भी काफी देर तक सरपंच जी के घर पर काम करता रहा। इसीलिए आज तुझे बहुत कम काम दे रहा हूँ। तुझे सिर्फ राम मंदिर के चारों ओर के परिसर में झाड़ू लगाकर चले जाना है बस्स!"

साइलु हन्मन्लू की असलियत बहुत अच्छी तरह जानता था। उसकी बात अभी पूरी हुई भी नहीं थी कि साइलु ने कहा- "मैं जानता हूँ साब! कि काम कितना कम है। कल 108 घरों (परिवारों) ने मिलकर लछमीनारायण (लक्ष्मीनारायण) की पूजा की थी। पूरा मंदिर कचरे के ढेर में बदल गया होगा। कल के उस पूजा-पाठ में इस्तेमाल में लाये गए केले के पत्ते झाड़ू मारकर जमा नहीं कर सकते। पहले उनकु हाथों से उठाकर दूर फेंकना पड़ता। फिर झाड़ू लगाना पड़ता। किस नज़र से तुमको ये काम कम दिखता है मुखिया जी?" अब साइलु की आवाज में जाड़े की नमी नहीं थी।

"अरे ! ऐसा नै है रे...!" मुखिया ने साइलु की आवाज में आई गर्माहट को भाँप कर कहा। वह अपनी सफ़ाई देने ही वाला था कि साइलु ने "चलता मैं!" ऐसा कहकर अपनी बाँई काख में थामें झाड़ू को फिर से दाहिने हाथ में पकड़कर राम मंदिर की ओर कदम बढ़ाने लगा।

दिन निकल आ रहा था । फिर भी हल्का-सा कोहरा छाया हुआ था । लोग अपने-अपने काम में मशगूल थे । जहाँ-तहाँ अलाव जल रहे थे । चारों ओर धुआँधार वातावरण था । साइलु अब बस थोड़ी ही देर में राम मंदिर पहुँचने वाला था । वह जैसे-जैसे मंदिर के करीब आने लगा वैसे-वैसे उसे मंदिर के चबूतरे पर एक धुंदली-सी आकृति नजर आने लगी । वह आश्चर्यचकित होकर, मन ही मन सोचने लगा कि "मंदिर के पुजारी तो कभी इतनी जल्दी आते नहीं यहाँ । और तो और आज न ही कोई विशेष पूजा-पाठ भी है यहाँ । मंदिर के चबूतरे पर दिखाई देने वाली उस अस्पष्ट आकृति की ओर देखते हुए और कुछ सोचते हुए वह आगे बढ़ रहा था । जब वह मंदिर के परिसर में पहुँचा तो वहाँ केले के पत्तों और पूजा की सामग्री आदि की सड़ती गंधनाच रही थी । सहसा उसे यकीन हुआ कि वह आकृति किसी बूढ़े आदमी की है । उसने देखा कि राम मंदिर के चबूतरे पर वह बूढ़ा आदमी अपने घुटनों को छाती से चिपकाए हुए बैठा है । साइलु ने यह भी गौर किया कि कभी वह अपने सिर को दोनों घुटनों में रख कर जोर-जोर से और सिसक-सिसक कर रोता, तो कभी वह अपने सिर को शतुरमुर्ग-सा ऊपर उठा कर इधर-उधर देखने लगता । साइलू उस बूढ़े व्यक्ति के करीब आ गया । उसने देखा कि बूढ़े व्यक्ति ने रंग-बिरंगी कपडे पहन रक्खे थे । गले में कई रुद्राक्ष की मालाएँ थीं । माथे पर चन्दन का बड़ा-सा टीका था । उसने अपने सिर के सफ़ेद बालों को किसी साधु-संत की तरह ऊपर की ओर बाँध रक्खे थे । उसका यह अवतार साइलु को विचित्र-सा लग रहा था । उसे लगने लगा कि यह बूढ़ा आदमी किसी नाटक मंडली या किसी सर्कस में काम करता होगा और वहीं पर किसी से लड़-झगड़ कर, बिना कपडे बदले भाग आया होगा । साइलु उस बूढ़े आदमी के पास खड़े होकर पूछने लगा- "अरे भाई ! कौन हो तुम? कहाँ से आये हो? और ऐसे फूट-फूट कर रो क्यों रहे हो?"

लगातार दो-तीन सवाल पूछे जाने पर बूढ़ा आदमी, जो घुटनों में अपना सिर दबाकर रो रहा था, अपना रोना बंद कर अपने आपको थोड़ा-सा सम्हाल लिया । अपनी सफ़ेद और लंबी दाढ़ी के बालों पर हाथ फेरते हुए साइलु की तरफ देखने लगा । तभी साइलु ने गौर किया कि उसकी आँखें एकदम लाल थीं । वह फिर सोच में पड़ गया कि शायद बहुत देर तक रोते रहने के कारण आँखें लाल हुई होंगी या रात भर न सोने की वजह से या फिर ठर्रा वगैरह पी रक्खी होगी उसने । तभी बूढ़ा आदमी अपनी आँखें हथेलियों से पोंछते हुए साइलु के सवालों का जवाब दिया कि – " हम ब्रह्मा हैं वत्स...! ब्रह्मा! हम स्वर्गलोक से यहाँ पधारे हैं, और इस समय हम बहुत दुखी हैं ।"

इतना सुनते ही साइलु को पूरा यकीन हो गया कि यह कोई गयी हुई चीज है । और पक्का वह किसी नाटक मंडली में काम करता होगा । फ़िलहाल बहुत पी रखने के कारण उसे कुछ याद नहीं आ रहा है । बूढ़े व्यक्ति को फटकार लगाते हुए व्यंग्य में साइलु ने कहा- "ओ...ओ...! ब्रह्माण्ड के कर्ता-धर्ता ! चल..! अब अपनी नौटंकी बंद कर के अपने घर का रास्ता पकड़ । अगर तुझे किसी ने यहाँ ऐसे पिये हुए हालात में देख लिया न..? तो याद रखना पूरा स्वर्गलोक याद आ जायेगा ।"

"अरे...मुर्ख..!" उस बूढ़े ने अपनी लाल-लाल आँखें फाड़कर इतने जोर से चिल्लाया कि मानो कान के परदे फट-से जाय । साइलु स्तब्ध रह गया । वह शक की नज़र से उसे देखते हुए सोचने लगा कि "इस बूढ़े आदमी में इतनी ताक़त कि पूरा मंदिर ही गूँज उठे? ज़रूर कुछ तो गड़बड़ है ।" बूढ़ा आदमी एकदम गुस्से से साइलु की तरफ देख कर जोर से चिल्लाते हुए बोल पड़ा- "हमने कहा था न...! कि हम ब्रह्मा हैं, स्वर्गलोक के रहनेवाले !"

तभी साइलु ने तर्क के साथ धीमी आवाज़ में कहा- "ठीक है, ठीक है! अगर तुम असल में ब्रह्मा ही हो तो फिर ऐसे फूट-फूट कर रोने का क्या मतलब? लोग कहते हैं कि यह पूरा गोला (ब्रम्हाण्ड) तो तुम्हारे ही कब्ज़े में है । ऐसा भी कहते हैं कि तुम ही पूरे बिस्व (विश्व) के सुख-दुःख के कर्ता-धर्ता हो । फिर ऐसे... यहाँ...मंदिर के चबूतरे पर बैठ कर रो...ना...!" उसने हिचकिचाते हुए फिर से कई सारे सवाल जड़ दिए । इतने सारे सवाल पूछे जाने के बाद वह मंदिर के चबूतरे से नीचे उतरा और धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए एक विचित्र-सी हँसी हँसते हुए बोलने लगा- "हाँ ! हाँ ! यह सच है कि हम ही इस सृष्टि के सुखकरता-दुखहरता हैं, किंतु... किंतु...!" बीच में ही उसने अपनी बात रोक दी । थोड़ी देर चुप रहा । साइलु भी चुप चाप उसकी ओर देखने लगा । कुछ देर बाद वह अपनी दोनों बाहों को फैलाकर सिर को आसमान की तरफ उठाया । सड़क के बीचों-बीच लंबी-लंबी छलाँग लगाते हुए दौड़ने लगा । साथ ही साथ जोर-जोर से रोने भी लगा । ऐसे ही दोनों बाहें फैलाये, रोते और छलाँग लगाते हुए कुछ दूर जाने के बाद वह बहुत ही जोर-जोर से चिल्लाते-रोते हुए कहने लगा- "देवाधीनं जगत्सर्वम्, मंत्राधिनंच दैवतम्, ते मंत्रा: ब्राम्हणाधिनं, ब्राह्मणो मम दैवतम् !"

साइलु उस रोते-उछलते-कूदते आकृति की ओर देख रहा था । उसके मस्तिष्क में एक विचारपूर्ण और तार्किक सवाल हिलोरे मारने लगा कि "क्या सच में 'इन लोगों' के पाखंड से देश का बहुसंख्यक जनसमुदाय और तथाकथित भगवान भी त्रस्त हैं ?"